चांद मुबारक तो हमारी आदिम परंपरा है / शरद कोकास

दुनिया के हर धर्म का कैलेंडर सबसे पहले चांद का ही कैलेंडर बना, क्योंकि इंसान रोज चांद को घटते हुए देखता था फिर एक दिन वह गायब होता था फिर बढ़ते बढ़ते पूरा चांद हो जाता था फिर घटना शुरू होता था। सूरज तो रोज एक जैसा ही दिखाई देता था इसलिए चांद ही उसका सब कुछ था। इस चांद से ही महीने बने फिर साल बने। इसी चांद के कारण तीज त्यौहार बने ईद और दीवाली जैसे पर्व बने। ईद उल फितर दूज के दिन होती है तो ईद उल अजहा दशमी के दिन होती है। दिवाली अमावस के दिन तो होली पूर्णिमा के दिन। हर दिन चांद का है। हर मजहब का हर धर्म का कैलेंडर चांद और सूरज का कैलेंडर ही है। जब चांद और सूरज सबके हैं तो हम आपस में क्यों लड़ते हैं ? दुआ करें कि लोगों की जिंदगी में हमेशा सूरज चांद बने रहें , यह चांद सुख का हो सूरज खुशियों का हो। दुख की अमावस कभी न आने पाए। आमीन। ईद मुबारक हो ।

मैं अंधविश्वासी नहीं हूं कहने वालों की सच्चाई

आज समाज अंधविश्वास रूपी गंभीर बीमारी से जूझ रहा है और यह बीमारी मनुष्य को सदियों से पकड़ा हुआ है। लेकिन कोई भी व्यक्ति मानने को तैयार नहीं है कि उसे इस बीमारी ने पकड़ा है, उसका इलाज भी संभव है। पागल को पागल बोलेंगे तो आपको ही मारने-काटने को दौड़ेगा। ऐसा ही हाल अंधविश्वासी लोगों का है, भूल से भी आप उसको अंधविश्वासी और पाखंडी कह देंगे तो आपको कुत्ते से भी ज्यादा भौंकने के साथ काटने के लिए दौड़ेगा। इस कड़ी कठिनाइयों के बावजूद हमारे देश में अनेक समाज सुधारक इन अंधविश्वासी-पाखंडी लोगों के इलाज का बीड़ा उठाया और अभी भी उठाते आ रहे हैं। बहुतों ने इस समाज सुधार के कार्य को आगे बढ़ाते हुए, पाखंडीपंथी को तर्क देते हुए उन पाखंडियों के हाथों अपनी जान भी गवा बैठे। उन्हें देश और समाज के खातिर शहीद होना पड़ा।

खुद का अंधविश्वास लोगों को विश्वास लगता है

मैं जब भी लेख पोस्ट करता हूं। बहुत से मित्र का ज्यादातर यही प्रश्न रहते हैं कि आप दूसरे धर्म के खिलाफ क्यों नहीं लिखते। हमारे धर्म के ही अंधविश्वास आपको दिखाई देता है या कोई कहता है कि हमारे धर्म में कोई अंधविश्वास नहीं है, ये तो सब विश्वास है, भूत-प्रेत, डायन को हम नहीं मानते, हम भी अंधविश्वास के खिलाफ है, ऐसे धार्मिक अंधविश्वासियों के प्रश्न रहते हैं। नशा करने वाला नशेड़ी कहता है %मैं तो तंबाकू बस खाता हूं% और वह आपको तंबाकू के बहुत से फायदे बताते हुए, शराब, गांजा और बाकि नशे को गलत बताएगा। ऐसा ही अंधविश्वासी लोगों का है, खुद को अंधविश्वासी नहीं मानेगा। स्वयं के बारे में सुनना नहीं चाहेगा, दूसरों के बारे में कहना ही अच्छा लगता है। अपना पिछवाड़ा खुद को नहीं दिखता, दूसरों के पिछवाड़े गंदा है देखकर खुश होता है। तथाकथित बुद्धिजीवी और आम लोगों से कहना चाहता हूं कि %अपना पिछवाड़ा पहले धोने की जरूरत है।

भूत-प्रेत दिखना अंधविश्वास, भगवान दिखना विश्वास ?

भूत-प्रेत, तंत्र-मंत्र, डायन को हम नहीं मानते, बस %भगवान पर विश्वास% है, ऐसे अंधविश्वास से हमें बचाएं कहने वाले लोग मिलते ही रहते हैं। भूत-प्रेत भ्रम है किसी ने नहीं देखा। तो क्या भगवान-अल्लाह को किसी ने देखा ? भगवान का भ्रम हो तो विश्वास और भूत-प्रेत का भ्रम हो तो अंधविश्वास, इसी को कहते है %अपना बच्चा अंधा पड़ोसी का चश्मा देख हंसी आय%। ओझा तांत्रिक अपनी दुकान बंद नहीं करना चाहता। दूसरी तरफ धार्मिक पाखंडी भगवान के नाम की दुकान को बंद न हो इसके लिए पूरा जोर लगा रखा है और उस दुकान के ग्राहक अपना लेन-देन की दुकान और उसमें बिकने वाली वस्तु को अच्छा समझता है, उसे अच्छा लगता है। दूसरे की दुकान और वस्तु खराब लगता है। गलत किसी भी के हो, कितनी भी ताकतवर हो गलत ही रहेगा। सभी समझदारों को चाहिए कि समाज में व्याप्त तमाम अंधविश्वासों को खुलकर विरोध करें तभी बदलवा संभव है।

- मनोवैज्ञानिक टिकेश कुमार, अध्यक्ष, एंटी सुपरस्टीशन ऑर्गेनाइजेशन (एएसओ)

इतिहास के पन्नों से

जब देश में था ठगों का आंतक, कर्नल स्लीमैन ने किया था खात्मा

भारत मे 17-18 वीं शताब्दी में ठगों का आतंक चरम पर था। इनमे से एक 'पिंडारी' थे और दूसरे थे, 'ठग'। ये ठग बर्बर और क्रूर हत्यारे हुआ करते थे। इनका आतंक सम्पूर्ण मध्यभारत में था। व्यापारी हो या यात्री, जिसे लूटना होता उसे ये योजनाबद्ध रूप में अंजाम देते। व्यापारियों आदि के दल में शामिल होते और उन्हें रुमाल से गला घोंटकर मारते फिर कई जगहों से हड्डियों को तोड़कर उसकी गठरी बनाकर गड्ढे में फेंक देते। यह गड्ढे ये खुद बनाते थे। कुएं, बावड़ी का भी उपयोग किया जाता था। ये ठग काली के भक्त थे। इस तरह हजारों लोग गायब होने लगे। उनके आतंक से राहें सुनसान होने लगीं। इन ठगों का सरगना था, बेहराम। बेहराम का जन्म 1765 में हुआ था जिसे एक क्रूर ठग ने पाला था। बेहराम ने 1790 से 1840 तक अभूतपूर्व आतंक कायम किया था। उसके गिरोह में 200 लोग थे। बेहराम का कत्ल करने का तरीका अनोखा था। वह एक पीले रुमाल के छोर पर सिक्का बांधे रखता और उसी रुमाल से ही गला घोंट कर लोगों को मारता था।

तब ब्रिटिश शासन की सबसे बड़ी समस्या ठग थे। इनके आतंक से निपटने उन्हें एक विभाग ही गठित करना पड़ा और 1809 में उसका मुखिया बनकर आया, कर्नल स्लीमैन। उसने मामले को जल्द ही भांप लिया। उसने जबलपुर को अपना मुख्यालय बनाया और ग्वालियर होते दिल्ली तक के रातों के जंगलों को कटवाया। उसने गुप्तचर विभाग का गठन किया। माना जाता है कि भारत की वर्तमान खुफिया विभाग की नींव यहीं से पड़ी। उसने ठगों की भाषा सीखी। उनकी भाषा 'रामोसी' कहलाती थी। तमाम धर पकड़ अभियानों के बाद स्लीमैन ने बेहराम को 1840 में गिरफ्तार कर लिया और जो कुछ उसने बताया, वह अभूतपूर्व था। बेहराम के गिरोह ने 931 हत्याएं की थीं जिसके बाद उन्होंने गिनना छोड़ दिया था। इनमे 150 की हत्या अकेले बेहराम ने अपने पीले रुमाल से की थी। यह सीरियल किलिंग गिनीज बुक ऑफ द वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज हुई थी। बेहराम को जबलपुर में ही फांसी दी गयी थी।

1835 में जब लार्ड विलियम बैंटिंग ने ठगों से उत्पन्न समस्याओं के लिए कुछ कानून बनवाये। उसने ठग बनने के कारणों को जानने ठगों से बातचीत करने को कहा। इस बातचीत को फिलिप मिडोस टेलर नाम के लेखक ने किताब का रूप दिया जिसका नाम था, 'द कन्फेशन ऑफ ठग'। यह किताब उस समय इंग्लैंड में बेस्ट सेलर थी। माना जाता है कि इस किताब और तत्कालीन नए बने कुछ कानूनों के आधार पर भारतीय दंड संहिता (IPC) 1861 का निर्माण हुआ जो आज भी उसी रूप में संचालित है।

कर्नल स्लीमैन ने एक गांव बसाया और थाना खुलवाया जहां इन ठगों के खिलाफ कार्यवाही की जाती थी। कर्नल स्लीमैन को मध्यप्रदेश पुलिस का जंनक भी कहा जाता है। यह गांव आज स्लीमाबाद के नाम से है जो जिला-कटनी, मप्र में आता है। स्लीमैन के वंशज आज भी इस गांव में कभी कभी आते हैं।

इंडिया-अमेरिका, दोनों का .....

पेज दो का शेष

रु 38,116 करोड़-2018 -19, रु 40,330 करोड़-2019 -20, रु 43,916 करोड़- 2020 -21, रु 40,840 करोड़-2021-22 इसमें 59,000 करोड़ में फ्रांस से ख़रीदे 36 विमान शामिल नहीं हैं।

इस बार अमेरिका से भी 'डेमोक्रेसी, परस्पर सहयोग और तकनीकी विकास की साझेदारी' के नरम मखमली आवरण के नीचे अत्याधुनिक हथियार, मारक हथियारों से लैस ड्रोन और देश में बन रहे लड़ाकू विमानों की इंजन ख़रीदी ढकी हुई है। ऐसा भी हो सकता है कि डेमोक्रेसी का ये राग-दरबारी छेड़ा ही इसलिए गया, कि हथियारों की ख़रीदी और किस भाव में ख़रीदी हुई, उस पर लोगों का ध्यान ना जाए। हथियारों के अलावा, अमेरिका के पास अब बेचने को कुछ रह ही नहीं गया है। उसका जनवाद कनपटी पर बंदूक रखकर ही प्रस्थापित होता है!! अमेरिका ने भारत को 3 बिलियन डॉलर के हथियार बेचे हैं जिनमें 1.8 बिलियन के 31 अत्याधुनिक ड्रोन भी शामिल हैं, जो विध्वंसक हथियारों और ख़ुफ़िया यंत्रों से लैस होंगे। अंतर्राष्ट्रीय रक्षा सौदों में कमीशनखोरी की परंपरा पुरानी है। एयर फ़ोर्स ने 18 ड्रोन मांगे, सरकार ने 31 ख़रीदे! स्पेन ने ये ही ड्रोन, हमसे 3 गुना कम दाम में ख़रीदे। मतलब मोदी का डिनर, इस कंगाल मुल्क को बहुत मंहगा पड़ा। कोई भी सरकार हो, लोक सभा चुनाव से पहले रक्षा ख़रीदी ज़रूर करती है, वजह सब जानते हैं!! एक और हकीक़त बताई जानी चाहिए; अंतरिक्ष-विज्ञान में इसरो और नासा के बीच सहयोग। दरअसल अंतरिक्ष-विज्ञान विकास के नाम पर भी जो हो रहा है, वह भी युद्धों की तयारी ही है। ज्यादा से ज्यादा दूर तक मार करने वाले मिसाइल को बनाने में भी वही तकनीक इस्तेमाल होती है, जो उपग्रह प्रक्षेपण में होती है।

भारत हो या अमेरिका, रूस हो या युक्रेन, चीन हो या जापान; शासक वर्ग का डीएनए समान है। सभी की नसों में, देश के मेहनतकशों, कमेरों, किसान-मज़दूरों से नफ़रत, उन्हें बहकाकर मुगालते में रखने की तिकड़में और चंद वित्तीय धन-पशुओं की लूट को क़ायम रखने, उसे बढ़ाने की तरकीबें, उनकी ताबेदारी का ज़ज्बा प्रवाहित हो रहा है। पूंजी का ये राज, सामंतवाद को उखाड़कर आया था लेकिन उसमें एक अंतर था। सामंती लुटेरों को, भेष बदलकर पूंजीपति बन जाने और अपनी लूट के कारोबार को बचाकर निकल जाने की सुविधा, पूंजीवाद ने उपलब्ध कराई थी।

पूंजीवाद को दफ़नाने के लिए, जो समाजवादी क्रांति अवश्यम्भावी है, उसमें पूंजीपतियों को भेष बदलकर, अपने लूट-तंत्र को बचाने की ऐसी कोई सुविधा, भावी शासक, मज़दूर वर्ग नहीं देने वाला है। इसीलिए पूंजीवाद, अपनी निश्चित मौत टालने के लिए, पहले की सत्ताओं के मुकाबले, ज्यादा फड़फड़ा रहा है। क़ब्र में टांगें लटक रही हैं लेकिन धरती पकड़ रहा है!!

इस उपक्रम में, सारे के सारे समाज को ही, युद्धों द्वारा, सम्पूर्ण विनाश में धकेल दे रहा है। लोगों को रोटी नहीं, काम नहीं और ये हथियार खरीद रहा है। भूखे लोगों में दहशत ग़ाफ़िल करने के लिए ही या हो रहा है। बताना चाहता है, मानो पूंजीवाद ही मानव-विकास की अंतिम मंज़िल है। इस उपक्रम में लेकिन सत्ता का असली चेहरा नंगा हो रहा है और कमेरा वर्ग असली खेल को समझता जा रहा है।